अध्ययन सामग्री
बी॰ ए॰ (संस्कृत) पार्ट 2
प्रश्नपत्र - चतुर्थ
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्राचार्य
संस्कृत विभाग
उच॰ डी॰ जैन कॉलेज
आरा (बी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰)

08.05.21

स्त्रीप्रत्यय प्रकरणम्

पुलिङ्ग प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जो प्रत्यय जोड़े जाते हैं, उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहते हैं।

यथा - अज से अजा
कुमार से कुमारी

स्त्रीत्व बोधक प्रत्यय हैं — टाप्, डाप्, चाप्, ङीप्, ङीष्, ङीन्, ऊङ् एवं ति।

इन प्रत्ययों से बने शब्द स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं। इसलिए इन प्रत्ययों को स्त्रीप्रत्यय कहते हैं।

स्त्रीप्रत्ययों में प्रथम तीन प्रत्यय - टाप्, डाप् और चाप् — में केवल 'आ' शेष रहता है
ङीप्, ङीष् और ङीन् — में 'ई' शेष रहता है
ऊङ् में केवल 'ऊ' शेष रहता है।

संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं —
पुलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग

भाष्यकार ने लिङ्ग के स्वरूप का निर्धारण इस प्रकार किया है —

स्तनकेशवती स्त्री स्यात्लोमशः पुरुषः स्मृतः।
उभयोरन्तरं यच्च तदभावे नपुंसकम्॥

अर्थात् स्तन, केश आदि से युक्त रहने पर स्त्रीलिङ्ग होता है

रोम आदि से युक्त पुल्लिङ्ग होता है एवम् इन दोनों से भिन्न 'नपुंसकलिङ्ग' होता है। किन्तु शारीरिक चिह्नों के आधार पर सर्वत्र निर्णय सम्भव नहीं होता, क्योंकि लिङ्ग का निर्धारण लोक के आश्रय से ही होता है।

भाष्यकार का भी यह कथन है —

'लिङ्गमशिष्यम्, लोकाश्रयत्वाल्लिङ्गस्य।'

अर्थात् लिङ्ग ~~निर्णय~~ के लिए सूत्र करने की आवश्यकता नहीं है, लिङ्ग लोक के आश्रय से ही समझ लिया जाता है। यथा — वृक्षः, खट्वा एवं फलम् आदि में लिङ्ग का निर्णय स्तन, केश, लोम के आधार पर नहीं किया जा सकता, लोक में प्रयोग के आधार पर इन्हें क्रमशः पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग एवं नपुंसकलिङ्ग समझा (माना) जाता है।

स्त्रियाम्

यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र का अधिकार 'समर्थानां प्रथमाद्वा' तक है। तात्पर्य यह है कि 'स्त्रियाम्' से लेकर 'समर्थानां॰' सूत्र के पूर्व तक प्रातिपदिक से जिन प्रत्ययों का विधान किया गया है, वे प्रत्यय स्त्रीलिङ्ग में ही होते हैं अर्थात् स्त्रीत्व का बोध कराते हैं।

'स्त्रियाम्' सूत्र ~~में अतिरिक्त~~ 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से 'प्रातिपदिकात्' तथा अधिकार सूत्र 'प्रत्ययः' और 'परश्च' की अनुवृत्ति की जाती है। अतः स्त्रियाम् के अतिरिक्त प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः और परश्च का भी यहाँ अधिकार है। अतः पुल्लिङ्ग प्रातिपदिक से स्त्री प्रत्यय लगाने के बाद 'सु' आदि प्रत्ययों की उत्पत्ति होकर स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं।

अजाद्यतष्टाप्

सूत्र का शब्दार्थ है — (अजाद्यतः) अजादि और अकार से 'टाप्' प्रत्यय होता है। किन्तु यह प्रत्यय किस अर्थ और किस स्थिति में होता है — यह जानने के लिए अधिकार सूत्र 'स्त्रियाम्' और 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से 'प्रातिपदिकात्' की अनुवृत्ति करनी होगी।

अजादि गण है और इसमें 'अज', 'एडक' और 'अश्व' आदि का समावेश होता है।

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा — अजादिगण में पठित 'अज' आदि और अकारान्त प्रातिपदिक से स्त्रीलिङ्ग (स्त्रीत्व की विवक्षा) में टाप् (आ) प्रत्यय होता है।

उदाहरण — 'अज' शब्द से स्त्रीत्व की विवक्षा में 'टाप्' प्रत्यय होने पर "अज आ" रूप बनता है। 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घादेश होकर 'अजा' रूप बनता है।

इसी प्रकार 'एडक' से 'एडका' और 'अश्व' से 'अश्वा' आदि अन्य रूप बनते हैं।

अब यह प्रश्न उठता है कि सूत्र में पठित 'अतः' से ही अकारान्त 'अज' आदि शब्दों का ग्रहण ~~हो~~ हो जाता तो 'अजः' आदि को विशेष रूप से पढ़ने की क्या आवश्यकता है?

इसका उत्तर यह है कि यद्यपि सूत्र में पठित 'अतः' से ही अकारान्त 'अज' आदि शब्दों का ग्रहण ~~हो~~ हो जाता तथापि अजादि को विशेष रूप से पढ़ने के कारण यह सूत्र 'अज' आदि शब्दों से प्राप्त होने वाले 'ङीप्' तथा 'ङीष्' प्रत्ययों का अपवाद रूप में बाधक हो जाता है।

जाति अर्थ में अज आदि शब्दों से 'जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्' इस सूत्र से ङीष् हो जाता। ऊन वाला, वत्सा आदि शब्दों में 'वयसि प्रथमे' सूत्र से ङीप् हो जाता।

अजादि के पढ़ने से उन 'ङीप्' तथा 'ङीष्' प्रत्ययों का

वाच्य से जाता तथा टाप् ही होता है।

सूत्र में अजादि स्त्रीत्व का विशेषण है। इसीलिए जहाँ 'अज' आदि का वाच्य स्त्रीत्व रहता है वहीं 'टाप्' होता है। यही कारण है कि 'पञ्चानाम् अजानाम् समाहारः' इस विग्रह में बने 'पञ्चाज' शब्द से इस सूत्र से 'टाप्' नहीं होता है, 'द्विगोः' सूत्र से 'ङीप्' होकर पञ्चाजी बनता है।

~~अजा~~ – (रूपसिद्धिः)

1) **अजा**

अज शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में 'अजाद्यतष्टाप्' से टाप् होता है। 'चुटू' से 'ट्' की एवं 'हलन्त्यम्' से 'प्' की इत्संज्ञा होती है।

तस्य लोपः से लोप होकर 'आ' शेष रहता है।

अतः 'अज आ' की स्थिति में 'अकः सवर्णे दीर्घः' से दीर्घ होने पर 'अजा' शब्द से 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से 'सु' विभक्ति आती है।

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से 'उ' की इत्संज्ञा होती है और 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' से स् का लोप होने पर 'अजा' प्रयोग सिद्ध होता है।

2) **खट्वा** – खट्व शब्द से स्त्रीत्व अर्थ में इस शब्द से 'अजाद्यतष्टाप्' से टाप् होने पर 'खट्वा' रूप बनता है।

3) **पञ्चाजी** – पञ्चानाम् अजानाम् समाहारः (लौकिक विग्रह)
पञ्चन् आम् अज आम् (अलौकिक विग्रह)

'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' से समास होने पर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा के बाद विभक्ति लुक् एवं दीर्घ होने पर 'पञ्चाज' शब्द बनता है।

'संख्यापूर्वो द्विगुः' से पञ्चाज की द्विगु संज्ञा होने पर

'द्विगोः' से ङीप् (ई) प्रत्यय होने पर 'पञ्चाजी' शब्द बनता है।

'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति आती है

पञ्चाजी सु

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से उ की इत्संज्ञा, तस्य लोपः से लोप

'हलङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्' से 'स्' का लोप होने पर 'पञ्चाजी' प्रयोग सिद्ध होता है।

ऋन्नेभ्यो ङीप्

सूत्र का अर्थ है — ऋकारान्त एवं नकारान्त शब्दों से स्त्री अर्थ में 'ङीप्' प्रत्यय होता है।

ऋकारान्त का उदाहरण — कर्त्री आदि

नकारान्त का उदाहरण — योगिनी, दण्डिनी आदि

रूपसिद्धिः —

कर्त्री — कृ धातु से कर्ता अर्थ में तृच् होने पर 'कर्तृ' शब्द बनता है। कर्तृ शब्द ऋकारान्त है। अतः स्त्रीत्व की विवक्षा में 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' से 'ङीप्' होता है। कर्तृ + ङीप्

'लशक्वतद्धिते' से ङकार की तथा 'हलन्त्यम्' से पकार की इत्संज्ञा होती है।

'तस्य लोपः' से लोप हो जाता है।

कर्तृ ई की स्थिति में

'इको यणचि' से ऋ का यण् 'र्' होने पर

क र् त् र् ई — कर्त्री शब्द बनता है।

'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति आती है।

'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से सु के उ की इत्संज्ञा

'तस्य लोपः' से लोप

'हलङ्याब्भ्यो सुतिस्यपृक्तं हल्' से स् का लोप होने पर
कर्त्री प्रयोग सिद्ध होता है।

दण्डिनी – दण्ड: ~~अस्ति~~ अस्य इस विग्रह में दण्ड शब्द से
'अत इनिठनौ' सूत्र से 'इन्' प्रत्यय होने पर
'दण्डिन' शब्द बनता है।
'दण्डिन' शब्द के नकारान्त होने से स्त्रीत्व की
विवक्षा में 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' सूत्र से 'ङीप्' प्रत्यय
होता है।
'लशक्वतद्धिते' सूत्र से ङकार की तथा
'हलन्त्यम्' सूत्र से पकार की इत्संज्ञा होती है,
'तस्य लोप:' सूत्र से लोप

दण्डिन् ई
दण्डिनी शब्द बनता है
'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' से सु विभक्ति
'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' से सु के 'उ' की इत्संज्ञा
'तस्य लोप:' से लोप
'हलङ्याब्भ्यो सुतिस्यपृक्तं हल्' से स् का लोप
होने पर दण्डिनी प्रयोग सिद्ध होता है।